

डॉ. डेव मैथ्यूसन, रहस्योद्घाटन, व्याख्यान 2, साहित्यिक शैलियाँ

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक - एपोकैलिप्टिक, प्रोफेटिक और एपिस्टल के पीछे की साहित्यिक शैली पर सत्र संख्या 2 है।

हम रहस्योद्घाटन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और साहित्यिक पृष्ठभूमि के बारे में भी थोड़ी बात कर रहे हैं, और मैंने सुझाव दिया कि किसी भी अन्य बाइबिल पुस्तक, विशेष रूप से न्यू टेस्टामेंट पुस्तक की तरह, उन परिस्थितियों और वातावरण को समझना महत्वपूर्ण है जो वास्तव में अवसर पैदा करते हैं। पुस्तक।

जब रहस्योद्घाटन की पुस्तक की बात आती है, तो अक्सर हम इसकी उपेक्षा करते हैं या भूल जाते हैं, और हम अक्सर अपने आधुनिक दिन में कूदने के लिए प्रलोभित होते हैं और रहस्योद्घाटन में जो कुछ भी हम पाते हैं, उसके साथ हमारे दिन में क्या चल रहा है, इसे सहसंबंधित करने का प्रयास करते हैं। जैसा कि हमने देखा, यह कोई नई बात नहीं है। चर्च के इतिहास का शाब्दिक अर्थ दूसरी, तीसरी और चौथी शताब्दी से है, प्रकाशितवाक्य के व्याख्याकारों ने ऐसा किया है।

उन्होंने अपने समय की घटनाओं को देखा है और आश्चर्य हो गए हैं कि वे घटनाएँ रहस्योद्घाटन को समझने और खोलने की कुंजी थीं या रहस्योद्घाटन सीधे उन्हीं घटनाओं से बात कर रहा था या उनकी भविष्यवाणी कर रहा था। लेकिन मैंने सुझाव दिया है कि किसी भी अन्य पुस्तक की तरह, हमें रुकना होगा और सबसे पहले, ऐतिहासिक और साहित्यिक रूप से, इसके संदर्भ के प्रकाश में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की जांच करनी होगी। हमने रहस्योद्घाटन की साहित्यिक शैली या साहित्यिक प्रकार पर थोड़ा ध्यान दिया है, जिससे पता चलता है कि रहस्योद्घाटन, जैसा कि अधिकांश व्याख्याकार सहमत हैं, में कम से कम तीन साहित्यिक रूप शामिल हैं, एक सर्वनाश, एक भविष्यवाणी और एक पत्र।

और चूंकि विशेष रूप से एक सर्वनाश से हम परिचित नहीं हैं और हमारे पास कोई बहुत करीबी आधुनिक उपमा नहीं है, हालांकि मैं कुछ सुझाव दूंगा जो हमें इसे समझने में मदद कर सकते हैं, यह महत्वपूर्ण है कि हम रुकें और जांच करें कि ये क्या हैं साहित्यिक प्रकार हैं, क्योंकि मुझे विश्वास है कि ये सभी साहित्यिक प्रकार जॉन को अच्छी तरह से ज्ञात होंगे और उनके पहले पाठकों को भी अच्छी तरह से ज्ञात होंगे। और इसलिए, हमें यह पूछना होगा कि ये साहित्यिक प्रकार क्या थे और पाठकों ने इन्हें कैसे समझा होगा? और फिर इससे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्याख्या करने के हमारे तरीके में क्या फर्क पड़ता है? तो हम सर्वनाश से शुरुआत करेंगे। आज, जैसा कि हमने पहले कहा है, आज जब हम सर्वनाश के बारे में सोचते हैं, तो हम इतिहास के विनाशकारी अंत, विश्वव्यापी पैमाने पर कुछ आपदा, दुनिया के अंत, दुनिया के एक विनाशकारी, प्रलयकारी अंत के बारे में सोचते हैं और यही हम सोचते हैं। सर्वनाश से मतलब.

फिर भी पहली सदी में, जब हम पहली सदी के संबंध में सर्वनाश के बारे में बात करते हैं, तो मुझे यकीन नहीं है कि उन्होंने इसे दुनिया के अंत या किसी विश्वव्यापी आपदा के संदर्भ के रूप में समझा होगा, लेकिन उन्होंने इसे इस तरह समझा होगा एक साहित्यिक रूप। फिर, सर्वनाश शब्द कोई साहित्यिक शब्द नहीं है जिसका उपयोग उन्होंने किसी प्रकार के साहित्य को संदर्भित करने के लिए किया होगा। यह वह है जिसे हम उपयोग करते हैं, लेकिन यह वास्तव में आता है, सर्वनाश शब्द प्रकाशितवाक्य अध्याय एक और श्लोक एक से निकला है, और विद्वानों ने इस शब्द को तब लिया है और इसका उपयोग साहित्यिक कार्यों के समूह या लेखों के समूह को संदर्भित करने के लिए किया जाता है जो रहस्योद्घाटन से मिलते जुलते हैं बहुत सावधानी से।

तो, मुद्दा यह है कि ऐसा प्रतीत होता है कि लेखों का एक समूह अस्तित्व में है जिसमें विशिष्ट और अद्वितीय विशिष्ट विशेषताएं हैं जिनमें रहस्योद्घाटन शामिल है, और विद्वानों ने रहस्योद्घाटन या सर्वनाश शब्द का उपयोग किया है, ग्रीक शब्द एपोकलुप्सिस जो अध्याय एक और श्लोक एक में आता है। इस प्रकार के साहित्य के लिए। तो, प्रकाशितवाक्य एक, पद एक यीशु मसीह के रहस्योद्घाटन से शुरू होता है, जिसे भगवान ने अपने सेवकों को दिखाने के लिए उसे दिया था। इसलिए, हम पहले ही इस शब्द को बहुत संक्षेप में देख चुके हैं, शब्द सर्वनाश या रहस्योद्घाटन, और यह एक अनावरण या अनावरण को संदर्भित करता है।

लेकिन फिर, यह मूल रूप से किसी प्रकार के साहित्य को संदर्भित नहीं करता है, लेकिन इस शब्द का उपयोग करके भी, जॉन यह सुझाव देता है कि वह साहित्य का एक टुकड़ा लिख रहा है जो एक खुलासा या अनावरण पर निर्भर करता है या उसकी विशेषता होगी। और आज हम इसका उपयोग एक विशिष्ट प्रकार के लेखन को संदर्भित करने के लिए फिर से करते हैं। इस प्रकार का लेखन, जिसे हम सर्वनाश कहते हैं, मोटे तौर पर लगभग अस्तित्व में था, या हमारे पास मौजूद अधिकांश सर्वनाशों का रिकॉर्ड एक सामान्य साहित्यिक प्रकार था जो लगभग 200 ईसा पूर्व से 200 ईस्वी तक फला-फूला।

यह एक सुप्रसिद्ध पहचानने योग्य प्रकार का साहित्य रहा होगा, और हमारे बाइबिल में धर्मग्रंथ के कैनन में केवल दो उदाहरण हैं, निस्संदेह, रहस्योद्घाटन और फिर डैनियल की ओल्ड टेस्टामेंट पुस्तक है। ईजेकील की पुस्तक में ऐसे भाग हैं जो सर्वनाश से मिलते जुलते हैं। यशायाह और जकर्याह की किताबों में ऐसे खंड हैं जो सर्वनाश से मिलते जुलते हैं।

लेकिन ऐसे कई अन्य लेख भी हैं जो प्रकाशितवाक्य और डैनियल की किताबों से मिलते जुलते हैं। तो, रहस्योद्घाटन और डैनियल लेखन के एक व्यापक समूह का ही हिस्सा हैं, फिर से, विद्वान सर्वनाश का लेबल लगाने लगे हैं। और हम देखेंगे कि वह क्या है।

यदि आप पढ़ने में रुचि रखते हैं, और मैं आपको ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करूंगा, तो अन्य सर्वनाश, सबसे अच्छा कोई लिखित रूप में कर सकता है, हार्ड कॉपी में, जेम्स चार्ल्सवर्थ, ओल्ड टेस्टामेंट स्पूडेपिग्राफा द्वारा संस्करणों को सुरक्षित कर सकता है। खंड एक अधिकांश सर्वनाशों के अंग्रेजी अनुवादों का संग्रह है। दोबारा लिखा गया, लगभग 200 ईसा पूर्व और 280 के बीच।

अन्यथा, आप अब ऑनलाइन जा सकते हैं और Google पर उनमें से अधिकांश का अंग्रेजी अनुवाद पा सकते हैं। कार्य, आपको प्रथम हनोक, द्वितीय हनोक, द्वितीय बारूक, और चतुर्थ एज्रा जैसे कार्यों का सामना करना पड़ सकता है और इब्राहीम का सर्वनाश सामान्य सर्वनाश हैं। हरमास का चरवाहा एक प्रारंभिक ईसाई सर्वनाश था जिसे लगभग प्रकाशितवाक्य के समान ही लिखा गया था, हालांकि यह हमारे नए नियम के सिद्धांत में शामिल नहीं था।

लेकिन ये सभी कार्य रहस्योद्घाटन और डैनियल से बहुत मिलते जुलते हैं और मुझे लगता है कि रहस्योद्घाटन क्या है, इसे थोड़ा और समझने में हमारी मदद करते हैं। तो, सर्वनाश क्या है? सबसे पहले, एक सर्वनाश, एक साहित्यिक रूप के रूप में, एक प्रकार के साहित्य के रूप में, एक सर्वनाश मूल रूप से किसी की दृष्टि का प्रथम-व्यक्ति वर्णन था। तो, यह माना जाता है कि किसी को दूरदर्शी अनुभव हुआ है और अब वह उसे आत्मकथात्मक रूप में लिखता है।

तो, यह किसी के दूरदर्शी अनुभव की एक कहानी है जिसे उन्होंने लिखा है और अब यह दूसरों को पढ़ने के लिए उपलब्ध है और, एक अर्थ में, लगभग फिर से अनुभव होता है कि द्रष्टा, नाम अक्सर उस व्यक्ति पर लागू होता है जिसके पास दृष्टि थी, क्या द्रष्टा ने देखा, अब उसे लिखता है और अपने पाठकों को बताता है। सर्वनाश के पीछे की धारणा जानने का एक तरीका है। अक्सर, अतीत में, सर्वनाश इतिहास के एक निश्चित दृष्टिकोण से जुड़ा हुआ था जहां इतिहास मूल रूप से बुरा था और इसके लिए इतिहास का अंत और एक नई दुनिया के उद्घाटन की आवश्यकता थी, एक नया युग जो धार्मिकता और आशीर्वाद लाएगा।

तो, आपके पास वर्तमान दुष्ट युग के बीच यह द्वंद्व था जो बुराई पर हावी था और बड़े पैमाने पर बुराई के लिए छोड़ दिया गया था और भविष्य में आने वाले किसी युग में केवल एक आशा थी जो इसे प्रतिस्थापित करेगा और धार्मिकता और आशीर्वाद लाएगा। और यह इतिहास में हस्तक्षेप करने और इतिहास को समाप्त करने और आने वाले इस युग का उद्घाटन करने के लिए विशेष रूप से ईश्वर के कार्य से ही आ सकता है। प्रायः सर्वनाशकारी साहित्य को एक प्रकार के युगान्त विज्ञान के संकेत के रूप में देखा जाता था।

अर्थात्, इतिहास बुरा था, इतिहास को छोड़ दिया गया था, और हमारी एकमात्र आशा ईश्वर की ओर से इतिहास में एक दिव्य और प्रत्यक्ष हस्तक्षेप की थी ताकि इसे समाप्त किया जा सके और एक नई दुनिया का उद्घाटन किया जा सके। हालांकि, मुझे लगता है कि यह अधिक मौलिक है, और वास्तव में, मैं तर्क दूंगा कि जब आप बहुत सारे सर्वनाश पढ़ते हैं, तो वे सभी उस परिदृश्य में फिट नहीं होते हैं। सर्वनाश के पीछे एक अधिक मौलिक धारणा जानने का एक तरीका है।

एक सर्वनाश, फिर से किसी के दूरदर्शी अनुभव का प्रथम-व्यक्ति वर्णन। तो एक दूरदर्शी अनुभव होना चाहिए और व्यक्ति अब इसे लिखता है और बताता है कि उसने क्या देखा। इसके पीछे धारणा यह है कि स्वर्गीय दुनिया का ज्ञान, जो हम सांसारिक दुनिया में देखते हैं उससे परे, एक और ज्ञान है, स्वर्गीय दुनिया का ज्ञान, ब्रह्मांड का ज्ञान, भविष्य का ज्ञान, स्वर्ग के रहस्य, इसे केवल ईश्वरीय और ईश्वर के लोगों के लिए प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन द्वारा ही जाना जा सकता है।

इस प्रकार का ज्ञान, स्वर्गीय दुनिया का ज्ञान, भविष्य का ज्ञान, ब्रह्मांड का ज्ञान, स्वर्ग के रहस्य, संचार के सामान्य तरीकों से नहीं जाना जा सकता है, बल्कि केवल प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। ईश्वर की ओर से प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन। तो, यह वह धारणा प्रतीत होती है जो सर्वनाश के पीछे निहित है, कि स्वर्गीय दुनिया और भविष्य और स्वर्ग के रहस्यों का ज्ञान है जिसे केवल ईश्वर के प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन द्वारा ही समझा और जाना जा सकता है। और वह सर्वनाश के पीछे छिपा है।

इसलिए व्यक्ति के पास दूरदृष्टि होनी चाहिए। यह ज्ञान दूरदर्शी रूप से संप्रेषित होता है। लेखक तब इस दृष्टि को प्राप्त करता है और फिर बताता है कि उसने क्या देखा।

फिर, आप इसे पहले से ही यशायाह अध्याय छह जैसी पुस्तकों में पाते हैं। हम इसे प्रकाशितवाक्य के अन्य पाठों के संबंध में देखेंगे। ईजेकील अध्याय एक और दो और ईजेकील 40 से 48 तक, ईजेकील के अंतिम कई अध्याय अंतिम अंत समय मंदिर का दर्शन हैं।

हमने पहले ही पुराने नियम में डैनियल की पुस्तक का उल्लेख किया है। इसमें से अधिकांश डैनियल के दर्शन का रिकॉर्ड है। और फिर ये सभी अन्य सर्वनाश इस विशेषता को साझा करते हैं कि वे स्वर्गीय दुनिया के ज्ञान और भविष्य के ज्ञान का संचार करते हैं जिसे केवल ईश्वर से प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

कोई केवल स्वर्ग की तिजोरी को भेद सकता है, ऐसा कहें तो, ईश्वर द्वारा स्वर्ग को खुलवाकर। और वास्तव में, इन सर्वनाशों में यह आम भाषा है, कि स्वर्ग खुल गए क्योंकि यही एकमात्र तरीका है जिससे द्रष्टा इस ज्ञान को प्राप्त कर सकता है, यह दिव्य ज्ञान जिसे ईश्वर प्रकट करता है और प्रकट करता है ताकि वह इसे अपने लोगों तक पहुंचा सके। . तो, यह पहली बात है।

सर्वनाश एक द्रष्टा की दृष्टि का एक दूरदर्शी वृत्तांत या एक कथात्मक वृत्तांत है, मुझे खेद है, एक द्रष्टा की दृष्टि का एक कथात्मक वृत्तांत है, जो मानता है कि स्वर्गीय ज्ञान है। स्वर्ग और भविष्य के रहस्यों को केवल प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन से ही जाना जा सकता है जिसे अब लेखक अपने पाठकों के लाभ के लिए कथात्मक रूप में प्राप्त करता है और लिखता है। फिर, यह भी संभव है कि ऐसा करने में, एक अर्थ में, लेखक अपने पाठकों को, एक अर्थ में, दृष्टि को फिर से अनुभव करने की अनुमति दे रहा था और किसी स्तर पर उस व्यक्ति को फिर से अनुभव करने की अनुमति दे रहा था जो व्यक्ति ने अपने दूरदर्शी अनुभव में देखा था।

दूसरी बात, जैसा हमने अभी कहा, उसमें मैंने पहले ही संकेत दिया था कि सर्वनाश मुख्य रूप से स्वर्गीय दुनिया और भविष्य के बारे में हैं। अब फिर से, यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह धारणा हुआ करती थी कि सर्वनाश भविष्य के बारे में था, और भविष्य के बारे में बहुत सारी जानकारी है, लेकिन सर्वनाश में पाई जाती है। हालाँकि, ऐसी भी कई जानकारी है जो स्वर्ग के वातावरण का खुलासा करती है।

वास्तव में, हम देखेंगे कि अध्याय चार और पाँच में रहस्योद्घाटन शुरू होता है, भविष्य की दृष्टि से नहीं, बल्कि जॉन के स्वर्ग जाने और स्वर्गीय वातावरण को देखने, भगवान के सिंहासन को देखने, सिंहासन पर बैठे भगवान और पूरे स्वर्ग को देखने के साथ। इतिहास या भविष्य से संबंधित

किसी भी चीज़ के बारे में बात करने से पहले उसे घेर लें। तो, सर्वनाश न केवल थे, और शायद हमें कहना चाहिए कि वे मुख्य रूप से भविष्य के बारे में नहीं थे। सर्वनाश का बोझ भविष्य की भविष्यवाणी करना नहीं था।

लेकिन फिर, सर्वनाश का अर्थ स्वर्ग के रहस्यों को प्रकट करना, स्वर्गीय दुनिया को प्रकट करना था। फिर, वे चीज़ें और जानकारी जिन्हें संचार के अधिक तर्कसंगत तरीकों से ज्ञात या समझा नहीं जा सका। इसलिए, सर्वनाश में, हम अक्सर द्रष्टा को स्वर्ग पर चढ़ते हुए देखते हैं, स्वर्ग में ले जाया जाता है, या कभी-कभी अन्य स्थानों पर ले जाया जाता है।

पुनः, आप इसे प्रकाशितवाक्य चार और पाँच में देखते हैं। यशायाह अध्याय छह, ईजेकील एक और दो की शुरुआत पैगंबर के ऊपर जाने या ईश्वर और उसके सिंहासन और स्वर्ग या उसके चारों ओर स्वर्गदूत के साथ स्वर्गीय वातावरण के दर्शन से होती है। तो, न केवल भविष्य के बारे में, हालाँकि वह इसमें शामिल है, बल्कि स्वर्गीय दुनिया के बारे में भी।

और इनमें से एक, मुझे लगता है कि अभी भी अधिक महत्वपूर्ण पुस्तकों में से एक है, हालाँकि एक पुराना काम, यदि आप 1980 के दशक की शुरुआत में क्रिस्टोफर रोलैंड के पुराने काम पर विचार करते हैं जिसे द ओपन हेवन कहा जाता है, जहाँ उन्होंने इस परिप्रेक्ष्य को बहुत मददगार ढंग से विकसित किया है। एक लंबा पढ़ा, लेकिन इसके कुछ हिस्से बहुत उपयोगी थे, जहाँ उन्होंने प्रदर्शित किया कि सर्वनाशी साहित्य की सामग्री सिर्फ भविष्य नहीं थी। सामग्री विविध थी, लेकिन उन्होंने कहा कि धारणा यह थी कि मानवता और दुनिया के लिए भगवान के इरादे के बारे में रहस्य, स्वर्गीय रहस्य थे, और स्वर्गीय दुनिया के रहस्य जिन्हें केवल ज्ञात किया जा सकता था, केवल एक दिव्य रहस्योद्घाटन द्वारा ही प्रकट किया जा सकता था। दर्शन का स्वरूप।

और यही सर्वनाश है। तो, सबसे पहले, सर्वनाश किसी के दूरदर्शी अनुभव का एक कथात्मक विवरण है। नंबर दो, यह अक्सर भविष्य के बारे में है, लेकिन मुख्य रूप से स्वर्गीय दुनिया के बारे में है जो व्यक्ति ने जो देखा उसकी सामग्री है।

फिर, धारणा यह है कि स्वर्ग के रहस्य और भगवान के रहस्य और मानवता और दुनिया के लिए उनके इरादे को केवल एक दिव्य रहस्योद्घाटन द्वारा ही जाना जा सकता है। सर्वनाश की तीसरी विशेषता यह है कि आमतौर पर स्वर्गीय दुनिया और भविष्य के बारे में यह जानकारी अत्यधिक प्रतीकात्मक भाषा और कल्पना के माध्यम से संप्रेषित की जाती है। रूपक और प्रतीकवाद संचार के प्राथमिक साधन हैं।

तो, एक द्रष्टा के पास एक दूरदर्शी अनुभव होता है और वह जो देखता है उसे प्रतीकात्मक भाषा में बताया जाता है और फिर वह प्रतीकात्मक भाषा और प्रतीकवाद में लिखता है जो जितना संभव हो सके उतना करीब से मिलता जुलता है जो उसने वास्तव में दृष्टि में देखा था। इसलिए, आप अक्सर लेखकों को यह कहते हुए पाते हैं, मैंने क्रिस्टल की तरह चमकती हुई कोई चीज़ देखी, या मैंने किसी को मनुष्य के पुत्र के रूप में देखा, या मैंने किसी को सिंहासन के रूप में देखा। विचार यह है कि लेखक ने अपनी दृष्टि में जो देखा, वह यथासंभव निकट से मिलता-जुलता है।

तो, मुझे लगता है, और मैं इसे मानता हूँ, कि लेखक अपने दूरदर्शी अनुभव में उन चीजों को देखता है जो उसे बताई जाती हैं या वह प्रतीकात्मक रूप में देखता है, और फिर जब वह उन्हें लिखता है और उनका वर्णन करता है, तो वह उन्हें प्रतीकों और छवियों का उपयोग करके बताता है। जितना संभव हो सके उतना करीब से वैसा ही जैसा उसने वास्तव में देखा था। हम उस पर वापस आएं और देखेंगे कि यह महत्वपूर्ण क्यों है, लेकिन शायद प्रतीकवाद का उपयोग करने का एक कारण यह है कि लेखक एक स्वर्गीय वास्तविकता का खुलासा कर रहा है, एक वास्तविकता जो इस सांसारिक वास्तविकता से परे है, इसलिए प्रतीकात्मक भाषा उपयुक्त है, सबसे उपयुक्त है उस वास्तविकता को संप्रेषित करने के लिए उपयुक्त, कुछ ऐसा जो स्वर्गीय है और सांसारिक दायरे से परे है। हालाँकि, प्रतीकवाद में संचार करने का एक तरीका है जो संचार के सीधे, अधिक शाब्दिक साधनों की तुलना में अधिक शक्तिशाली है।

अर्थात्, प्रतीकवाद अक्सर न केवल सामग्री के रूप में संचार करता है बल्कि ऐसा इस तरह से करता है जो भावनाओं को उद्घाटित करता है और पूरे अस्तित्व को, तर्कसंगत रूप से, बल्कि भावनात्मक रूप से, शायद अधिक महत्वपूर्ण रूप से भावनात्मक रूप से, द्रष्टा और पाठकों के साथ संवाद करने में भी शामिल करता है। . इसके अलावा, हम देखेंगे कि प्रतीकात्मक भाषा में लेखक द्वारा देखी गई चीजों की सटीक सटीक पहचान के बजाय धार्मिक अर्थ पर अधिक ध्यान केंद्रित करने का एक तरीका है। तो, इसके बारे में सोचो.

आप पर किस चीज़ का अधिक प्रभाव पड़ता है? यदि आप किसी को यह कहते हुए सुनते हैं, तो उससे सावधान रहें क्योंकि वह चालाक और धोखेबाज होना जानता है, या सावधान रहें क्योंकि वह एक साँप है, उसे साँप कहने से भावनाएँ जागृत होती हैं, खासकर यदि आपको मेरी तरह साँपों से घृणा है। यह सभी प्रकार की भावनाओं को उद्घाटित करता है और आपकी भावनात्मक प्रतिक्रिया पर प्रभाव डालता है। उसे साँप कहना एक अधिक शक्तिशाली तरीका है, यह कहने का एक रूपक तरीका है कि वह चालाक और धोखेबाज है।

तो, प्रतीकवाद हमारी कल्पनाओं को जगाने, हमारी भावनाओं को जगाने, न केवल तर्कसंगत बल्कि उस जानकारी के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रिया लाने का एक तरीका है जिसे द्रष्टा अब संप्रेषित करता है। इसलिए, प्रतीकवाद सर्वनाशकारी साहित्य का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। लेखक ने वास्तव में जो देखा वह न केवल उसे प्रतीकात्मक रूप में बताया गया है, बल्कि अब वह प्रतीकात्मक और रूपक भाषा में लिखता है जो कि उसने वास्तव में जो देखा है उससे बहुत करीब से मिलता जुलता है।

तो, जैसा कि हम देखेंगे, सर्वनाश की व्याख्या करने का एक हिस्सा यह समझने की कोशिश करना है कि प्रतीकवाद का अर्थ क्या है। लेखक को प्रतीकवाद कहाँ से मिला? यह किसकी बात कर रहा है? यह क्या संचार करने का प्रयास कर रहा है? हम इसे बाद में देखेंगे और जैसे ही हम रहस्योद्घाटन के माध्यम से काम करेंगे, निश्चित रूप से, हमारे पास प्रतीकों और छवियों के साथ कुशती करने के सभी प्रकार के अवसर होंगे। सर्वनाश साहित्य की एक और विशेषता, कुछ चीजों से संबंधित जिनके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं, वह स्वर्गीय वास्तविकता और भविष्य की दृष्टि है। सर्वनाशकारी दृष्टि का उद्देश्य पाठकों को वर्तमान और वर्तमान समय पर एक नया दृष्टिकोण प्रदान करना है।

फिर, यानी, सर्वनाश का मतलब मुख्य रूप से भविष्य की भविष्यवाणी करना नहीं है, विशेष रूप से पाठकों के क्षितिज से बहुत दूर का भविष्य। सर्वनाश का उद्देश्य पाठकों की वर्तमान स्थिति पर एक दृष्टिकोण प्रदान करना है। आम तौर पर, सर्वनाश के पीछे धारणा यह है कि, हालांकि यह उन सभी के लिए सच नहीं है, मुझे लगता है कि फैसला अभी भी सामने आया है कि वास्तव में किस कारण से एक लेखक के पास एक दृष्टि थी और एक सर्वनाश लिखना था, किस प्रकार की स्थितियाँ थीं।

लेकिन एक सामान्य स्थिति अक्सर तब होती है जब भगवान के लोग किसी प्रकार के संकट का सामना कर रहे होते हैं, जैसे कि एक प्रमुख साम्राज्य के उत्पीड़न के तहत रहना, सर्वनाश का मतलब उन्हें इससे निपटने में मदद करना, उस पर एक परिप्रेक्ष्य प्रदान करना था। याद रखें कि हमने कहा था कि सर्वनाश का अर्थ स्वर्गीय लोकों और ईश्वर के इरादे की स्वर्गीय दुनिया की जानकारी को प्रकट करना और प्रकट करना या प्रकट करना है और स्वर्ग के रहस्य अब एक द्रष्टा के सामने प्रकट होते हैं जिसे वह मानवता या अपने पाठकों, ईश्वर के लोगों के साथ संचार करता है। . इसके पीछे का इरादा उनकी स्थिति पर एक परिप्रेक्ष्य प्रदान करना था, उन्हें इसे एक नई रोशनी में देखने की अनुमति देना था ताकि वे तदनुसार प्रतिक्रिया दे सकें।

एक बार जब उनके पास यह जानकारी होती है, एक बार जब उनके पास उनके लिए लिखी सर्वनाशी दृष्टि के माध्यम से यह ज्ञान होता है, एक बार जब उनके पास यह जानकारी और यह नया दृष्टिकोण होता है, तो वे अब अपनी स्थिति को एक नई रोशनी में देखने में सक्षम होते हैं और वे तदनुसार प्रतिक्रिया करने में सक्षम होते हैं . एक दृष्टि या सर्वनाश कैसे कार्य करता है, शायद आधुनिक समय की कुछ उपमाएँ। उनमें से एक, और यह मेरे लिए अद्वितीय नहीं है, यदि आप अधिक पढ़ेंगे तो आप पाएंगे कि कई लोग इस उदाहरण का उपयोग कर रहे हैं।

मैं इसे 1974 में और जॉर्ज बेस्ली मरे नाम के एक विद्वान की एक टिप्पणी से खोज पाया हूँ, एक प्रारंभिक टिप्पणी जो उन्होंने रिवीलेशन में लिखी थी, जो अभी भी बहुत उपयोगी है, लेकिन उन्होंने एक राजनीतिक कार्टून की सादृश्यता का उपयोग किया था। यह उससे पहले भी हो सकता है, लेकिन वह, बिना खोजे, उस सादृश्य का उपयोग करने वाला वह सबसे पहला व्यक्ति है जिसे मैंने पाया है और कई अन्य लोगों ने इसे आधुनिक समय तक अपनाया है। मुझे लगता है कि यह मददगार है।

इस बारे में सोचें कि एक राजनीतिक कार्टून कैसे काम करता है। जब आप कोई राजनीतिक कार्टून पढ़ते हैं, तो दो चीजें महत्वपूर्ण होती हैं। नंबर एक एक राजनीतिक कार्टून है जो अत्यधिक प्रतीकात्मक और अतिरंजित कल्पना के माध्यम से संचार करता है।

तो, आप एक राजनीतिक कार्टून पढ़ते हैं, यदि आप छवि से परिचित हैं और यदि आप राजनीतिक स्थिति से परिचित हैं, तो आप उन छवियों की पहचान करने में सक्षम हैं और उनका क्या मतलब है और वे क्या सुझाव दे रहे हैं और वे क्या हैं राजनीतिक स्थिति के बारे में संवाद. एक लेखक बस बैठ सकता है और राजनीतिक रूप से जो चल रहा है उसके बारे में अपने दृष्टिकोण के बारे में एक सीधा गद्य पैराग्राफ लिख सकता है, लेकिन एक कार्टून, एक राजनीतिक कार्टून

राजनीतिक रूप से क्या चल रहा है उस पर टिप्पणी करने या यहां तक कि उसकी आलोचना करने का एक अत्यधिक कल्पनाशील और विचारोत्तेजक तरीका है। और जब आप एक राजनीतिक कार्टून पढ़ते हैं, तो फिर, आप ध्यान देते हैं कि छवियां कभी-कभी अतिरंजित होती हैं।

कभी-कभी आप संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति या किसी अन्य देश के राष्ट्रपति या नेता की पहचान अतिरंजित विशेषताओं से कर सकते हैं, जैसे कि उनका सिर या कुछ और ताकि आप पहचानने से न चूकें। अक्सर जानवर संयुक्त राज्य अमेरिका में विभिन्न राजनीतिक दलों के संकेत या प्रतीक के रूप में कार्य करते हैं। हाथी एक राजनीतिक दल के प्रतीक के रूप में कार्य करता है।

गधा एक निश्चित राजनीतिक दल के प्रतीक के रूप में कार्य करता है। ईगल संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य छवियों के लिए एक प्रतीक के रूप में कार्य करता है जो स्टॉक छवियां हैं जिन्हें हम कुछ चीजों के साथ जोड़ने के आदी हो गए हैं। इसलिए, एक राजनीतिक कार्टून का लेखक उन छवियों और प्रतीकों का उपयोग करेगा जिनसे हम परिचित हैं और राजनीतिक स्थिति के बारे में कुछ इस तरह से संप्रेषित करने के लिए उन्हें लगभग बढ़ा-चढ़ाकर पेश करेंगे जो कि केवल सीधी जानकारी संप्रेषित करने से कहीं अधिक है।

यह आपकी भावनाओं पर खेलता है। यह एक प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है। यह आपकी कल्पना और भावनाओं में खेलता है ताकि आप एक तरह से प्रतिक्रिया दें और स्थिति को उस तरह से देखें जैसे कार्टून का लेखक आपसे चाहता है।

तो, राजनीतिक कार्टूनों के बारे में पहली बात उनकी प्रतीकात्मक प्रकृति है। वे प्रतीकों और रूपकों, राजनीतिक नेताओं और देशों की अतिरंजित कल्पनाशील निर्माणों, स्थितियों और इस तरह की चीजों के माध्यम से संवाद करते हैं। यह मुझे दूसरे फ्रीचर राजनीतिक कार्टून की ओर ले जाता है जो वास्तविक व्यक्तियों और घटनाओं को संदर्भित करता है।

वे काल्पनिक नहीं हैं। वे केवल एक परी कथा भाषा या चित्र या विज्ञान कथा नहीं हैं। वे वास्तव में शाब्दिक व्यक्तियों, घटनाओं और स्थानों का उल्लेख कर रहे हैं।

फिर भी उन व्यक्तियों, घटनाओं और स्थानों को अत्यधिक प्रतीकात्मक और रूपक भाषा में चित्रित किया गया है। सर्वनाश के बारे में भी यही सच है। मुझे लगता है कि सर्वनाश, इतिहास और भविष्य में वास्तविक व्यक्तियों, स्थानों और घटनाओं को संदर्भित करता है।

सर्वनाश भविष्य को संदर्भित करता है, हालांकि विशेष रूप से ऐसा नहीं है। तो, सर्वनाश पाठकों के समय और भविष्य में इतिहास में वास्तविक व्यक्तियों, घटनाओं और स्थानों को संदर्भित करता है। लेकिन सर्वनाश उन व्यक्तियों, स्थानों और घटनाओं का वर्णन एक राजनीतिक कार्टून की तरह अत्यधिक प्रतीकात्मक और कल्पनाशील, कभी-कभी अतिरंजित छवियों के साथ भी करता है ताकि आपको बात समझ में आ जाए।

ताकि आप स्थिति को नए तरीके से देखें। ताकि आप लेखक के नजरिए को नए ढंग से देख सकें। और फिर आप अपनी स्थिति को एक नई रोशनी में देखने में सक्षम हो जाते हैं।

इसलिए, उदाहरण के लिए, यदि आप ईश्वर के लोग हैं जो एक दमनकारी शासन, एक साम्राज्य के अधीन रह रहे हैं, तो एक सर्वनाश आपको उस स्थिति की पुनर्व्याख्या करने और इसे एक बिल्कुल नई रोशनी में देखने में मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए, राजनीतिक कार्टून हमें यह समझने में मदद कर सकते हैं कि सर्वनाश कैसे काम करता है। हां, यह वास्तविक शाब्दिक घटनाओं और स्थितियों और व्यक्तियों और स्थानों को संदर्भित करता है लेकिन यह उन्हें अत्यधिक प्रतीकात्मक, कल्पनाशील और कभी-कभी अतिरंजित भाषा में भी चित्रित करता है ताकि आपको बात समझ में आ जाए।

और ताकि आप स्थिति को एक नई रोशनी में देख सकें। एक और उपमा जो मैं सर्वनाश का वर्णन करने में उपयोग करना पसंद करता हूँ, वह कुछ हद तक एक नाटक देखने जैसा है। यदि आप किसी सभागार में बैठकर मंच पर चल रहे किसी नाटक को देख रहे हैं, तो आप केवल वही देखते हैं जो उस मंच पर हो रहा है।

आप जो नहीं देखते हैं वह पर्दे के पीछे, मंच के पीछे चल रहा है जो वास्तव में नाटक को सफल बनाता है। यदि आप पर्दा उठा सकते हैं और उसके पीछे देख सकते हैं, तो आप मंच प्रबंधक को देखेंगे, आप प्रकाश व्यवस्था के लिए जिम्मेदार सभी लोगों को देखेंगे, शायद आप साज-सामान और कपड़ों के लिए जिम्मेदार सभी लोगों को देखेंगे, आप लोगों को भागते हुए देखेंगे उन सभी प्रकार की चीजों के बारे में और उन्हें करना जो वास्तव में नाटक को सफल बनाती हैं। लेकिन जब आप सिर्फ नाटक देख रहे होते हैं तो आप उसे नहीं देख पाते।

रहस्योद्घाटन कुछ इसी तरह का होता है या एक सर्वनाश जैसा होता है। यह नाटक वैसा ही होगा जैसा आप अपनी आँखों से देखते हैं। अनुभवजन्य रूप से, मेरे आसपास क्या चल रहा है? और सर्वनाश क्या करता है, क्या यह पर्दा उठाता है ताकि आप पर्दे के पीछे और मंच के पीछे देख सकें कि वास्तव में क्या चल रहा है, एक पूरी नई वास्तविकता को देख सकें जो वास्तव में उस वास्तविकता को प्रभावित और प्रभावित करती है जिसे मैं अपने साथ देखता हूँ आँखें।

और फिर, सर्वनाश का पूरा बिंदु, जो मैं देखता हूँ उसके पीछे की वास्तविकता का ज्ञान केवल एक अनावरण के माध्यम से उपलब्ध होता है, स्वर्ग का पर्दा उठाने से ताकि आप इस भौतिक दुनिया के पीछे देख सकें, जो आंख से दिखता है उससे कहीं अधिक है। जब मैं अनुभवजन्य दुनिया को देखता हूँ जिसे मैं चख सकता हूँ, छू सकता हूँ और अपनी इंद्रियों से महसूस कर सकता हूँ और देख सकता हूँ, तो एक सर्वनाश मुझे याद दिलाता है कि वास्तविकता में इससे भी अधिक कुछ है। एक बिल्कुल नई वास्तविकता है, एक स्वर्गीय दुनिया, एक स्वर्गीय वास्तविकता, और एक भविष्य भी है जिसे केवल इस रहस्योद्घाटन और इस दृष्टि के माध्यम से ही प्रकट और ज्ञात किया जा सकता है।

और वह वास्तविकता प्रभावित करती है और निर्धारित करती है कि मेरी दुनिया में क्या चल रहा है। किसी तरह यह इसके पीछे खड़ा है। और इस वास्तविकता को देखकर, मैं नाटक को बिल्कुल नई रोशनी में देखता हूँ।

और अब मैं इस पर अलग ढंग से प्रतिक्रिया देने में सक्षम हूँ। इसलिए, उदाहरण के लिए, फिर से, रहस्योद्घाटन के साथ, शुरुआत में, शायद अब आप यह देखना शुरू कर सकते हैं कि रहस्योद्घाटन कैसे काम कर सकता है। और हम ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में बात करने में थोड़ा समय क्यों बिताते हैं।

पहली शताब्दी में कई पाठकों की स्थिति को देखते हुए, प्रकाशितवाक्य 2 और 3 के सात चर्च, रोमन साम्राज्य में रहते थे, जहां सीज़र अपने सिंहासन पर था, और जहां उन्हें सभी प्रकार की छवियों और ऋण के अनुस्मारक का सामना करना पड़ा था। वे अपनी समृद्धि, अपनी शांति और रोमन साम्राज्य की संस्कृति, वाणिज्य और धर्म में शामिल होने के साथ ईश्वर के प्रति विशेष पूजा और निष्ठा से समझौता करने के प्रलोभन के लिए सीज़र और यहां तक कि अन्य देवताओं और रोमन साम्राज्य के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। इसकी राजनीति, जो सभी एक साथ जुड़ी हुई थीं और सावधानीपूर्वक और बारीकी से एक-दूसरे से जुड़ी हुई थीं। तब प्रकाशितवाक्य की पुस्तक, एक सर्वनाश के रूप में, कहती है कि जब आप चारों ओर देखते हैं और रोमन साम्राज्य पर नज़र डालते हैं और जो कुछ हो रहा है, उसे आप अनुभवजन्य दुनिया में देखते हैं, तो वह सब कुछ नहीं है। जो दिखता है उससे कहीं अधिक है।

सर्वनाश के रूप में, रहस्योद्घाटन फिर पर्दा उठाता है या घूंघट उठाता है ताकि वे इतिहास के मंच के पीछे देख सकें। और वे वास्तव में स्वर्गीय दुनिया को देख सकते हैं और वे भविष्य को देख सकते हैं जो उन्हें अपनी स्थिति को एक नई रोशनी में देखने की अनुमति देता है। अब रोम पहले जैसा नहीं दिखता।

अब वे अपनी स्थिति को एक नई रोशनी में देखते हैं और समझते हैं कि उन्हें कैसे प्रतिक्रिया देनी है। एक सर्वनाश के रूप में, यह प्रतीकों, छवियों और रूपकों का उपयोग करके एक पूरी तरह से अलग परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है जो दर्शाता है कि उनकी दुनिया में क्या चल रहा है। इसलिए रोम से ना जुड़ें।

रोम के साथ अपना हिस्सा डालने से सावधान रहें। और सावधान रहें कि यीशु मसीह और ईश्वर के प्रति विशेष निष्ठा का उल्लंघन न करें, वह पूजा जिसके केवल वे ही पात्र हैं। तो सबसे पहले, हमने कहा कि रहस्योद्घाटन किसी के दूरदर्शी अनुभव का एक कथात्मक विवरण था।

दूसरा, उस दूरदर्शी अनुभव ने एक स्वर्गीय पारलौकिक वास्तविकता का संचार किया। तीसरा, इसे अत्यधिक प्रतीकात्मक भाषा के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है। यह इतिहास में वास्तविक व्यक्तियों, स्थानों और घटनाओं को संदर्भित करता है।

लेकिन यह प्रतीकात्मक और रूपक रूप से ऐसा करता है। चौथा, सर्वनाश के रूप में रहस्योद्घाटन एक दृष्टि है, स्वर्गीय दुनिया और स्वर्गीय वास्तविकता की दृष्टि के रूप में, उनकी

वर्तमान दुनिया पर एक अलग दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह उन्हें चीजों को एक नई रोशनी में देखने की अनुमति देता है।

और फिर अंततः, सर्वनाश का कार्य, फिर से, भविष्य की भविष्यवाणी करना नहीं है। सर्वनाश का प्राथमिक कार्य प्रोत्साहन और चेतावनी है। उदाहरण के लिए, यह उन संकटग्रस्त ईसाइयों या ईश्वर के लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए है जो दमनकारी साम्राज्य या समाज के हाथों पीड़ित हैं।

लेकिन इसका मतलब उन लोगों के लिए आसन्न फैसले की चेतावनी देना भी है जो समझौता करते हैं या जो अकेले ईश्वर के प्रति अपनी निष्ठा प्रदर्शित करने से इनकार करते हैं। जैसा कि आप रहस्योद्घाटन को देखते हैं, तो, रहस्योद्घाटन उन सभी विशेषताओं को साझा करता है जो विशेष रूप से इस प्रकार के साहित्य से संबंधित हैं जिन्हें सर्वनाश कहा जाता है। इसलिए, मेरी राय में, रहस्योद्घाटन को सर्वनाश के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

किसी की दृष्टि का प्रथम-व्यक्ति वर्णन, स्वर्गीय दुनिया और भविष्य का एक दूरदर्शी अनुभव, एक अत्यधिक प्रतीकात्मक भाषा में संप्रेषित किया जाता है जो प्रोत्साहन और चेतावनी दोनों के उद्देश्य से उनकी स्थिति पर एक उत्कृष्ट, स्वर्गीय परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। उस रहस्योद्घाटन में उन विशेषताओं को फिट बैठता है, इसे सर्वनाश का लेबल दिया जा सकता है। अब, ऐसी अन्य विशेषताएं हैं जो कभी-कभी आपको सर्वनाश में मिलती हैं जो कि प्रकाशितवाक्य में हैं जिन्हें मैंने नजरअंदाज कर दिया है।

उनमें से एक देवदूत प्राणियों का प्रचलन है। आप अक्सर सर्वनाश में देवदूतों को या तो उस व्यक्ति के साथ बात करते और संवाद करते हुए पाते हैं जिसके पास दृष्टि थी या उस व्यक्ति का नेतृत्व करते थे, चार्ल्स डिकेंस के क्रिसमस कैरोल में तीन आत्माओं की तरह जो एबेनेज़र स्कूज को एक दूरदर्शी यात्रा पर ले गए थे। कभी-कभी आप स्वर्गदूतों को वह भूमिका निभाते हुए और विभिन्न प्रकार की अन्य भूमिकाएँ निभाते हुए पृथ्वी पर न्याय करते हुए पाते हैं।

रहस्योद्घाटन भी, शुरू से ही, देवदूत प्राणियों के संदर्भों से भरा पड़ा है, शायद कुछ अन्य सर्वनाशों जितना व्यापक नहीं है, लेकिन फिर भी आपको प्रकाशितवाक्य की पूरी किताब में देवदूत प्राणी मिलते हैं। इसलिए, मेरे विचार से, रहस्योद्घाटन को स्पष्ट रूप से सर्वनाश के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। यह कितना भी अनोखा क्यों न हो, अन्य सर्वनाशों से कितना भी अलग क्यों न हो, रहस्योद्घाटन को अभी भी एक सर्वनाश के रूप में चित्रित किया जा सकता है।

एक विशेषता जो रहस्योद्घाटन को स्पष्ट रूप से अलग करती है वह यह है कि लगभग 200 ईसा पूर्व से 200 ईस्वी के बीच लिखे गए अधिकांश सर्वनाश जिन्हें विद्वान छद्म नाम कहते हैं, आमतौर पर किसी और के नाम पर लिखे गए थे। यानी जो व्यक्ति सपने देखने का दावा करता है वह वास्तव में वह व्यक्ति नहीं है। कोई हनोक या एज्रा की आत्मा में एक दर्शन होने का दावा कर सकता है।

दूसरे शब्दों में, 1 हनोक और 2 हनोक नामक पुस्तकें वास्तव में ऐतिहासिक रूप से उस व्यक्ति द्वारा नहीं लिखी गई थीं। वे स्पष्ट रूप से हनोक के नाम से किसी और के द्वारा लिखे गए थे। ऐसा

हो सकता है कि यह व्यक्ति वास्तव में हनोक की भावना में लिख रहा हो, हनोक का कार्यभार अपने ऊपर ले रहा हो और इस दृष्टि से लिख रहा हो।

दूसरों का सुझाव है, नहीं, यह सिर्फ कोई है जो अधिकार हासिल करने या सुनवाई हासिल करने की कोशिश कर रहा है, इसलिए वे हनोक या एज्रा या उसके जैसे किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम पर लिखते हैं। रहस्योद्घाटन किसी और के नाम पर नहीं लिखा गया है। जॉन अपने पाठकों के बीच स्वयं को एक समकालीन के रूप में पहचानते हैं।

वह दावा करता है, विशेष रूप से अध्याय 1 और श्लोक 9 में, वह कहता है, मैं, जॉन, आपका भाई और उस पीढ़ा और राज्य और धैर्यवान धीरज में साथी जो यीशु मसीह में हमारे हैं। जॉन लिखते हैं, अतीत के किसी ऐतिहासिक व्यक्ति जैसे हनोक या एज्रा या अब्राहम या डैनियल या उसके जैसे किसी व्यक्ति के नाम पर नहीं। जॉन अपने ही पाठकों के समकालीन के रूप में लिखते हैं।

वह उनकी पीढ़ा और ईश्वर के राज्य में उनके साथ अपनी पहचान रखता है। अब वह उनके समकालीन के रूप में उनकी प्रत्यक्ष स्थिति को संबोधित करने के लिए लिखते हैं। रहस्योद्घाटन एक सर्वनाश है।

बाद में, हम देखेंगे कि इससे क्या अंतर आता है और हम इसे कैसे पढ़ते हैं। दूसरी साहित्यिक शैली या साहित्यिक प्रकार जिससे रहस्योद्घाटन स्पष्ट रूप से संबंधित है वह भविष्यवाणी है। वास्तव में, जॉन स्वयं पूरी पुस्तक में कई बार, शुरुआत में और विशेष रूप से अंत में, अपनी पुस्तक को एक भविष्यवाणी के रूप में संदर्भित करता है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, अध्याय 1 और पद 3 में, उन्होंने कहा, धन्य है वह जो इस भविष्यवाणी के शब्दों को पढ़ता है, और धन्य हैं वे जो इसे सुनते हैं और जो इसका पालन करते हैं। अध्याय 22 और पद 7, देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूं। धन्य है वह जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी के शब्दों का पालन करता है।

और श्लोक 10 भी. तब उस ने मुझ से कहा, इस पुस्तक की भविष्यवाणी के वचनोंको बन्द न करना। और श्लोक 18 और 19, मैं इस पुस्तक की भविष्यवाणी के शब्दों को सुनने वाले किसी भी व्यक्ति को चेतावनी देता हूं।

और 19, और यदि कोई भविष्यवाणी की इस पुस्तक से शब्द निकाल दे। इसलिए, जॉन स्पष्ट रूप से अपनी पुस्तक को लेबल करता है या अपनी पुस्तक को भविष्यवाणी के रूप में पढ़ने का इरादा रखता है। और जैसा कि हम देखेंगे, मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है कि वह पुस्तक की शुरुआत और अंत में ऐसा करता है।

जैसा कि हम देखेंगे, मैं जॉन को एक भविष्यवाणी के रूप में लिखकर और लेबल करके आश्चर्य हूं, हां, वह चाहता है कि इसे पहली शताब्दी की ईसाई भविष्यवाणी के एक प्रकार के रूप में समझा जाए। लेकिन साथ ही, जॉन स्पष्ट रूप से लिखता है जैसे कि वह पुराने नियम के

भविष्यवक्ताओं की परंपरा में लिख रहा हो। वह कुछ लिख रहा है जिसे वह उसी अधिकार और गंभीरता के साथ लेना चाहता है जिसके साथ वे यशायाह या ईजेकील को लेते हैं।

और इसे इस तथ्य से देखा जा सकता है कि जॉन बार-बार पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की भाषा से सीख लेता है। जॉन को अपनी बहुत सारी छवियाँ और प्रतीक कहाँ से मिलते हैं? उनमें से अधिकांश सीधे पुराने नियम के भविष्यसूचक पाठ से निकले हैं। इससे भी अधिक, जॉन अध्याय 10 जैसी भाषा का उपयोग करता है, वह स्कॉल खाने की भाषा का उपयोग करेगा।

या वह कमीशन की भाषा या कुछ दृश्यों का उपयोग करेगा जो सीधे भविष्यवाणी की किताबों से आते हैं। इसलिए जॉन का इरादा है कि उसकी पुस्तक मूल रूप से एक भविष्यवाणी और पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की परंपरा के अनुरूप और एक भविष्यवाणी हो, जैसे कि विशेष रूप से यहजेकेल और यशायाह और अन्य भविष्यवक्ता, यिर्मयाह, वगैरह। इसलिए, यह संदिग्ध है कि जॉन... मुझे यकीन नहीं है कि जॉन ने सर्वनाश को भविष्यवाणी से अलग किया होगा।

सबसे अधिक संभावना है, फिर से, हम दोनों को अलग करते हैं, लेकिन संभवतः जॉन ने उन्हें बहुत समान या समान के रूप में देखा होगा। वास्तव में, जैसा कि हम पहले ही यशायाह 6 और यहजेकेल 1 और 2 में देख चुके हैं, आपके पास भविष्यवक्ताओं के पास दूरदर्शी अनुभव हैं जो रहस्योद्घाटन में जॉन के समान दिखते हैं। वास्तव में, जॉन अपने स्वयं के दूरदर्शी अनुभव का वर्णन करने के लिए उन अंशों का उपयोग करेगा।

लेकिन जॉन का स्पष्ट इरादा है कि उनकी पुस्तक को पुराने नियम के भविष्यवक्ता के रूप में पढ़ा जाए या अतीत के महान पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की परंपरा में लिखा जाए। मैं लेखकत्व के बारे में संक्षेप में कुछ कहना चाहता हूँ। मैं इस बिंदु पर विस्तार नहीं करना चाहता और मैं लेखक की सटीक पहचान के लिए बहस करने में अधिक समय बर्बाद नहीं करना चाहता।

लेखक खुद को जॉन के रूप में पहचानता है, लेकिन पूरे चर्च के इतिहास में और यहां तक कि नए नियम को पढ़ने पर, आप पाते हैं कि कुछ जॉन हैं जो संभावित रूप से प्रकाशितवाक्य के लेखक हो सकते हैं। चर्च के इतिहास को पढ़ते हुए, आपको ऐसे कई जॉन मिलेंगे जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लेखक हो सकते हैं। हालाँकि, यह दिलचस्प है कि कई लोगों ने रहस्योद्घाटन में लेखक जॉन को चौथे सुसमाचार के समान लेखक और पहले, दूसरे और तीसरे जॉन के समान लेखक के रूप में समझा है, यानी प्रेरित जॉन, यीशु के शिष्यों में से एक, यीशु में से एक 'प्रेरितों'।

उन्होंने ही यह दृष्टि प्राप्त की थी। अन्य लोगों ने विभिन्न कारणों से इस पर संदेह किया है और कहा है कि वही जॉन इसे नहीं लिख सकता। इसलिए, वे अन्य जॉन्स की तलाश करते हैं जिनका उल्लेख साहित्य और चर्च के इतिहास में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के संभावित लेखक के रूप में किया गया है।

शायद यह पहली शताब्दी में कोई अन्य प्रसिद्ध जॉन था जो एक भविष्यवक्ता था और जो इन चर्चों में अच्छी तरह से जाना जाता था, इसलिए उदाहरण के लिए, उसे खुद को पहचानने में समय

बर्बाद नहीं करना पड़ा। हालाँकि मुझे लगता है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लेखक के रूप में जॉन प्रेरित के लिए एक अच्छा मामला बनाया जा सकता है, जब आप स्वयं प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पढ़ते हैं, तो यह दिलचस्प है कि लेखक प्रेरित के अधिकार का दावा नहीं करता है। यह विशेष रूप से दिलचस्प है क्योंकि लेखक पत्र के रूप में भी लिखता है, जैसा कि हम देखेंगे।

पॉल के विपरीत, जो अपने लगभग सभी पत्रों को अपने प्रेरितिक अधिकार के संदर्भ में शुरू करता है, और 1 कुरिन्थियों जैसी कुछ पुस्तकों में, वह बार-बार अपने पाठकों को संबोधित करने के लिए एक प्रेरित के रूप में अपने अधिकार का दावा करता है, जॉन ऐसा नहीं करता है। यूहन्ना दावा नहीं करता, भले ही यह प्रेरित यूहन्ना ही हो, यह दिलचस्प है, कि वह अपने अधिकार को अपने प्रेरितत्व पर आधारित नहीं करता है। इसके बजाय, वह पुराने नियम के भविष्यवक्ता के अधिकार का दावा करता है।

जैसा कि रिचर्ड बाखम कहते हैं, जॉन पुराने नियम की भविष्यवाणी परंपरा के चरमोत्कर्ष पर लिखते हैं। जॉन प्रदर्शित करेगा कि ये पुराने नियम की भविष्यवाणियाँ यीशु मसीह के व्यक्तित्व में अपने चरमोत्कर्ष और पूर्ति तक कैसे पहुँचती हैं। लेकिन अन्यथा, जॉन स्पष्ट रूप से पुराने नियम के भविष्यवक्ता के अधिकार का दावा करता है।

वह पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की परंपरा में लिखते हैं, अब दिखाते हैं कि वे यीशु मसीह के व्यक्तित्व में अपने चरमोत्कर्ष और पूर्णता तक कैसे पहुँचते हैं। तो, अधिक विशेष रूप से, वह भविष्यवाणी क्या है जो हमें यह समझने में मदद करेगी कि प्रकाशितवाक्य में क्या हो रहा है? मूलतः, पैगम्बर वह होता था जो लोगों को ईश्वर का सन्देश सुनाता था। जब आप पुराने नियम को ध्यान से पढ़ते हैं, तो आप देखना शुरू करते हैं कि ऐतिहासिक रूप से, पैगम्बरों को इज़राइल के इतिहास में विशिष्ट समय के दौरान भगवान द्वारा बुलाया गया था।

आमतौर पर जब वे परमेश्वर के साथ अपने अनुबंधित रिश्ते से भटक रहे थे, आमतौर पर जब वे मूर्तियों के पीछे और मूर्तिपूजा में जा रहे थे। अक्सर जब उन्हें अपने पापों के कारण निर्वासन और बन्धुवार्ड में भेजे जाने का खतरा होता था। जब उन्हें सांत्वना और प्रोत्साहन या चेतावनी के शब्दों की आवश्यकता होती थी, तो भगवान एक भविष्यवक्ता को बुलाते थे और उन स्थितियों में लोगों को संबोधित करने के लिए एक संदेश के साथ एक भविष्यवक्ता को खड़ा करते थे।

वास्तव में, एक लेखक ने कहा कि एक भविष्यवक्ता एक वाचा लागू करने वाला था। जो इसराइल को ईश्वर के साथ उसके अनुबंधित रिश्ते को लागू करेगा और याद दिलाएगा कि उसके उल्लंघन का खतरा था या उसने उल्लंघन किया था। इसलिए, एक भविष्यवक्ता का उद्देश्य लोगों को ईश्वर के साथ उनके अनुबंधित रिश्ते और अनुबंध के प्रति वफादारी के लिए वापस बुलाना था।

तो, इसका मुद्दा यह है कि एक भविष्यवक्ता मुख्य रूप से भविष्य का भविष्यवक्ता नहीं है। मुझे लगता है कि हम अक्सर भविष्यवक्ताओं को पढ़ते हैं जैसे कोई भविष्यवक्ता हो जो आपका भविष्य बताने के लिए क्रिस्टल बॉल को देखता है या टैरो कार्ड रीडर या पाम रीडर जो आपकी जिज्ञासा को संतुष्ट करता है या आपकी आशंका को शांत करता है और आपको इसका एहसास

दिलाता है। भविष्य में क्या होने वाला है, इसकी केवल भविष्यवाणी करके उस पर नियंत्रण रखें। किसी भविष्यवक्ता ने ऐसा नहीं किया।

भविष्यवक्ता कोई भविष्यवक्ता नहीं है जो केवल लोगों को यह बताने के लिए भविष्य बताता है कि भविष्य में क्या होने वाला है। एक भविष्यवक्ता, फिर से, वह था जिसने इज़राइल के इतिहास के कुछ निश्चित समय में ईश्वर के साथ वाचा के रिश्ते के प्रति वफादारी को वापस बुलाने के लिए ईश्वर के संदेश की घोषणा की। फिर, मुक्ति का वादा करके, लेकिन उन्हें आसन्न न्याय की चेतावनी देकर भी, यदि वे पश्चाताप और आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया देने से इनकार करते हैं।

इसलिए, एक भविष्यवक्ता ने लोगों को उनके ईश्वर के साथ रिश्ते में वापस बुलाया। एक भविष्यवक्ता ने एक सन्देश सुनाया। उन्होंने कई बार भविष्य की भविष्यवाणी की।

भविष्य में मुक्ति और न्याय की काफ़ी प्रत्याशा है, लेकिन यह उनका प्राथमिक उद्देश्य नहीं था। यहां तक कि इसका उद्देश्य भगवान के लोगों में विश्वासयोग्यता को प्रेरित करना और उन्हें पश्चाताप और भगवान के साथ रिश्ते में वापस बुलाना था। कभी-कभी हम भविष्यवक्ताओं को उनके आसपास के अधर्मी राष्ट्रों और साम्राज्यों की आलोचना करते हुए देखते हैं।

उन्होंने न केवल ईश्वर के लोगों को उनकी आध्यात्मिक स्थिति के बारे में संदेश दिया, बल्कि उन्होंने उस समय के ईश्वरविहीन, दमनकारी साम्राज्यों का भी खुलासा किया और उनकी आलोचना की, जिससे पता चला कि इसके परिणामस्वरूप उनका न्याय होगा और उन्हें हटा दिया जाएगा। इसलिए, भविष्यवक्ता मुख्य रूप से भविष्य के भविष्यवक्ता नहीं थे, बल्कि उनका उद्देश्य परमेश्वर के लोगों को वाचा के रिश्ते में वापस बुलाना था। भविष्यवक्ताओं ने भविष्य की भविष्यवाणी की थी, लेकिन वे अक्सर ऐसा करते थे कि वे वर्तमान स्थिति को दुनिया और मानवता के लिए ईश्वर के व्यापक उद्देश्यों की पृष्ठभूमि में रखते थे।

इसलिए, कभी-कभी आप भविष्यवक्ताओं को ऐसे बोलते हुए पाएंगे जैसे कि वे पाठक के अपने दिन या निकट भविष्य में उनके अस्तित्व और उनकी अपनी दुनिया के क्षितिज पर घटनाओं का वर्णन कर रहे हों, और फिर बहुत तेज़ी से उन घटनाओं का वर्णन करने के लिए आगे बढ़ते हैं जो आवरण को दर्शाती हैं- ऊपर या दुनिया के अंत और इतिहास के अंत का निष्कर्ष। फिर, भविष्यवक्ता अक्सर जो कर रहे थे वह बस यह प्रदर्शित करना था कि पाठकों की वर्तमान स्थिति अंततः कैसे प्रभावित होगी और पूरे इतिहास के लिए भगवान के व्यापक इरादों और उद्देश्यों के प्रकाश में समझी जाएगी। भविष्यवक्ता साहित्य की दूसरी विशेषता यह है कि भविष्यवक्ता या भविष्यसूचक साहित्य या भविष्यवाणी इतिहास में निहित थी।

भविष्यवाणी, फिर से, केवल भविष्य की भविष्यवाणी नहीं कर रही थी या केवल एक काल्पनिक प्रकार का साहित्य नहीं थी। भविष्यवाणी स्पष्ट रूप से इतिहास में निहित थी। यह इतिहास में ईश्वर के अभिनय के बारे में था।

यह इतिहास में ईश्वर के हस्तक्षेप के बारे में था। यह इतिहास में रहने वाले अपने लोगों के लिए परमेश्वर की योजनाओं और इच्छाओं के बारे में था। इसलिए, हमें उम्मीद करनी चाहिए कि एक

भविष्यवाणी के रूप में, रहस्योद्घाटन जैसी पुस्तक इतिहास में वास्तविक घटनाओं और व्यक्तियों और स्थानों के बारे में होगी।

यह इतिहास में ईश्वर द्वारा अपने लोगों के बीच में और उनकी ओर से कार्य करने के बारे में होगा। भविष्यवाणी की तीसरी विशेषता न केवल अपने लोगों के लिए ईश्वर के संदेश की उद्घोषणा है, विशेष रूप से उन्हें विश्वासयोग्यता की ओर वापस बुलाने के लिए, उन्हें समझौता और मूर्तिपूजा के बारे में चेतावनी देने के लिए, और ऐसा करने में ईश्वरविहीनता की आलोचना भी प्रदान करती है। दुष्ट साम्राज्य और राष्ट्र। दूसरा, यह न केवल इतिहास में निहित है, बल्कि यह इतिहास में ईश्वर के कार्यों को भी दर्शाता है।

तीसरा, भविष्यवाणी मुख्य रूप से वफादार और बेवफा दोनों के लिए न्याय और मुक्ति के बारे में प्राथमिक संदेशों में से एक है। भगवान के वफादार लोगों के लिए, भगवान मोक्ष और पुष्टि का वादा करते हैं और उन्हें उनके उद्धार के साथ पुरस्कृत करते हैं। उन लोगों के लिए जो समझौता करते हैं और पश्चात्ताप करने से इनकार करते हैं, और दुष्ट साम्राज्यों और राष्ट्रों के लिए जो भगवान के लोगों पर अत्याचार करते हैं, भगवान न्याय का वादा करते हैं।

और अंत में, एक सर्वनाश की तरह, एक भविष्यवाणी मुख्य रूप से प्रोत्साहन और चेतावनी के उद्देश्य से लिखी गई थी। फिर, कोई भविष्यवक्ता मुख्य रूप से भविष्य की भविष्यवाणी करने और सभी इजरायलियों को एक क्रिस्टल बॉल में देखने और उन्हें उनके भविष्य के बारे में बताने के लिए मंच पर नहीं था। एक भविष्यवक्ता मुख्य रूप से परमेश्वर के लोगों को प्रोत्साहित करने और चेतावनी देने के लिए, उन्हें परमेश्वर के साथ अपने अनुबंधित रिश्ते में वफादार बने रहने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, उससे भटकने के परिणामों के बारे में चेतावनी देने के लिए, और फिर से ईश्वरविहीन, दुष्टों पर आसन्न फैसले की चेतावनी देने के लिए था। राष्ट्र और साम्राज्य.

पुनः, उस रहस्योद्घाटन में ये सभी विशेषताएं निहित हैं। इस तथ्य का उल्लेख नहीं करने की आवश्यकता है कि जॉन स्पष्ट रूप से अपने काम को एक भविष्यवाणी के रूप में चित्रित करता है और यहां तक कि इसे कहता भी है। उनकी पुस्तक के आरंभ और अंत में, रहस्योद्घाटन का लेबल लगाना और इसे भविष्यवाणी के रूप में पढ़ना उचित है।

तीसरी चीज़, या तीसरा साहित्यिक प्रकार जो रहस्योद्घाटन से स्पष्ट रूप से संबंधित है, एक पत्र या पत्र है। यह दिलचस्प है, हम अक्सर नंबर एक और दो के लिए इसे नजरअंदाज कर देते हैं। हम इस तथ्य से मुग्ध हो जाते हैं कि रहस्योद्घाटन सर्वनाश है।

और जब आप पढ़ते हैं, विशेषकर अध्याय चार से बाईस तक, तो मूलतः यही चल रहा होता है। चार से बाईस में से बहुत कम अक्षर एक अक्षर जैसा दिखता है। यह स्पष्ट रूप से एक सर्वनाश या सर्वनाशी भविष्यवाणी है और यहीं पर आपको सभी दृश्य और अजीब छवियां मिलती हैं।

लेकिन दिलचस्प बात यह है कि रहस्योद्घाटन एक पत्र, पहली शताब्दी के पत्र या पत्र की तरह ही शुरू और समाप्त होता है। पुस्तक की शुरुआत और अंत काफी हद तक पॉल के पत्रों में से एक जैसा लगता है। इसलिए, उदाहरण के लिए, अध्याय एक से श्लोक चार से आठ तक शुरू करते हुए, इसे सुनें, जॉन, एशिया प्रांत के सात चर्चों के लिए, सात चर्चों के लिए अनुग्रह और

शांति, उसकी ओर से, जो है, और जो था, और जो आने वाला है, और उसके सिंहासन के साम्हने की सात आत्माओं में से, और यीशु मसीह में से, जो विश्वासयोग्य गवाह, और मरे हुएों में से पहलौठा, और पृथ्वी के राजाओं का प्रधान है, उस के पास जो हम से प्रेम रखता है और स्वतंत्र हुआ है उसने हमें उसके लहू के द्वारा हमारे पापों से छुड़ाया, और हमें एक राज्य और याजक बनाया, कि हम उसके परमेश्वर और पिता की सेवा करें, और उसकी महिमा और शक्ति युगानुयुग होती रहे।

तथास्तु। मैं यहीं रुकूंगा, मैं इस बिंदु पर सात और आठ नहीं पढ़ूंगा, हालांकि वे उन छंदों से संबंधित हैं। लेकिन ध्यान दें कि यह कैसे शुरू होता है, लेखक, जॉन और फिर सात चर्चों के पाठकों की पहचान, और फिर एक अभिवादन या आशीर्वाद, एक अनुग्रह और शांति खंड, जैसा कि आप पॉल के कुछ पत्रों में पाते हैं।

और फिर अंत में, अध्याय 22 और श्लोक 21 में, प्रकाशितवाक्य का अंतिम श्लोक, हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा परमेश्वर के लोगों पर बनी रहे, आमीन। पॉल के पत्रों में से एक की तरह समाप्त होना। इसलिए, प्रकाशितवाक्य स्पष्ट रूप से एक पत्र होने का इरादा रखता है जो अध्याय दो और तीन में पहले पाठकों, सात चर्चों को कुछ बताएगा।

रहस्योद्घाटन को एक पत्र के रूप में लेबल करने का महत्व, या इससे भी बेहतर, जॉन को एक पत्र के रूप में लिखने का महत्व, दूसरे शब्दों में, उसके पास यह दूरदर्शी भविष्यवाणी, यह सर्वनाशकारी भविष्यवाणी, ईश्वर का एक संदेश है एक सर्वनाशकारी दृष्टि, जिसे वह अब अपने पाठकों के लाभ के लिए पहली शताब्दी के पत्र या पत्र के ढांचे के भीतर रखकर लिखता है। इसमें महत्वपूर्ण क्या है? जो समझना महत्वपूर्ण है, और पहली सदी के नए नियम के साहित्य के अधिकांश विद्वानों, अधिकांश व्याख्याकारों और विद्वानों द्वारा अच्छी तरह से जाना जाता है, वह यह है कि एक पत्र की विशिष्ट विशेषताओं में से एक जिसे नए नियम के विद्वान कहते हैं, वे कभी-कभार होते हैं। और इसका मतलब यह नहीं है कि वे अवसर पर लिखे गए हैं, बल्कि कभी-कभार इसका मतलब यह है कि एक पत्र बहुत विशिष्ट परिस्थितियों या समस्याओं या मुद्दों के जवाब में तैयार और लिखा गया था।

अर्थात्, पॉल के पत्रों की तरह, रहस्योद्घाटन विशिष्ट समस्याओं और संकटों के जवाब में लिखा गया था, बहुत कुछ गैलाटियन्स की तरह जिसे हमने देखा था, जिसके बारे में हमने पहले बात की थी, गैलाटियन्स तथाकथित यहूदीवादियों के एक बहुत ही विशिष्ट संकट के जवाब में लिखा गया था जो पाठकों को आकर्षित करने की कोशिश कर रहे थे। मोज़ेक कानून को प्रस्तुत करें।¹ कोरिंथियन्स की पुस्तक कोरिंथियन चर्च में समस्याओं से संबंधित, संरक्षण प्रणाली से संबंधित, और आध्यात्मिक अभिजात्यवाद और द्वैतवाद से संबंधित और चर्च में घुसपैठ करने वाले अन्य मुद्दों से संबंधित कई मुद्दों को संबोधित करती है। एक पत्र के रूप में, हमें उम्मीद करनी चाहिए कि रहस्योद्घाटन चर्च में किसी विशिष्ट समस्या या संकट से कम नहीं होगा।

इसका मतलब यह भी है कि एक पत्र उस जानकारी को संप्रेषित करने के लिए लिखा गया था जो प्रासंगिक होगी और पहले पाठकों द्वारा समझी जाएगी। पत्रों को कुछ ऐसा संप्रेषित करना चाहिए

जिसे पाठक समझ सकें और उनकी स्थिति का समाधान कर सकें। एक पत्र का उद्देश्य पाठकों की विशिष्ट आवश्यकताओं और विशिष्ट ऐतिहासिक परिस्थितियों को ध्यान में रखना था।

तो, रहस्योद्घाटन, फिर, कम से कम इसकी शुरुआत और अंत, बहुत करीब से मिलता जुलता है और एक पत्र का प्रारूप है, हालांकि बीच में, रहस्योद्घाटन आवश्यक रूप से पॉल के पत्रों में से एक की तरह विकसित नहीं होता है। यह सच था कि पहली शताब्दी में, आप पत्र के माध्यम से किसी भी चीज़ के बारे में बात कर सकते थे। और इसलिए, मुझे यह महत्वपूर्ण लगता है कि जॉन ने अपने सर्वनाश को लिखने के लिए चुना है, अपने सर्वनाशकारी दूरदर्शी अनुभव को रिकॉर्ड करने के लिए, चर्चों के लिए अपने भविष्यसूचक संदेश को एक पत्र के रूप में और एक साहित्यिक रूप में दर्ज किया है जिसका उद्देश्य विशिष्ट को संबोधित करना था परिस्थितियाँ, जानकारी के साथ विशिष्ट समस्याएँ जो पाठकों द्वारा समझी और समझी जा सकें जो उनकी आवश्यकताओं और उनकी स्थिति को पूरा कर सकें।

और इसलिए, रहस्योद्घाटन, सर्वनाश की विशेषताओं में भाग लेता हुआ प्रतीत होता है और इसकी विशेषता प्रतीत होती है। यह अत्यधिक प्रतीकात्मक भाषा में एक उत्कृष्ट परिप्रेक्ष्य प्रदान करने वाली दृष्टि का एक कथात्मक विवरण है। यह एक भविष्यवाणी है।

यह एक उद्घोषणा है, ईश्वर का एक संदेश है जिसका उद्देश्य ईश्वर के लोगों को चेतावनी देना और प्रोत्साहित करना भी है। इसमें भविष्य के बारे में जानकारी शामिल है, लेकिन यह मुख्य रूप से आधुनिक स्थिति और आधुनिक पाठकों के लिए प्रासंगिक है। और फिर, अंततः, इसे एक पत्र के रूप में प्रस्तुत किया गया।

एक पत्र का मतलब था, अत्यधिक सामयिक था। इसका उद्देश्य पाठकों की विशिष्ट स्थिति को इस तरह से संबोधित करना था जिससे वे अपनी स्थिति को एक नई रोशनी में समझ सकें। तो, रहस्योद्घाटन, एक ऐसी पुस्तक है जो साहित्यिक रूपों में संचार करती है, चाहे वह हमारे लिए कितनी भी अजीब क्यों न हो, और उम्मीद है कि इन आखिरी कुछ मिनटों में हम इसे अजीब बनाने में सक्षम हो गए हैं, मुझे पता है कि यह कोई शब्द या प्रकार का अस्पष्ट रहस्योद्घाटन नहीं है, और यह साहित्यिक है जॉन ने जिन शैलियों को लिखने के लिए चुना और जिन शैलियों से पहली सदी के पाठक परिचित होंगे, उनका वर्णन करके शैलियाँ, एक सर्वनाश, एक भविष्यवाणी और एक पत्र।

अब, मैं आगे क्या करना चाहता हूँ, यह पूछना है कि इन तीन प्रकार के साहित्य को देखते हुए, हमें रहस्योद्घाटन कैसे पढ़ना चाहिए? इस तथ्य को देखते हुए कि रहस्योद्घाटन इन तीन साहित्यिक शैलियों से संबंधित है, एक सर्वनाश, एक भविष्यवाणी और एक पत्र, वे कौन से सिद्धांत हैं जो हमारे रहस्योद्घाटन को पढ़ने के तरीके को नियंत्रित करने चाहिए? वे कौन से व्याख्यात्मक सिद्धांत हैं जो पुस्तक की व्याख्या करने के हमारे तरीके को निर्धारित या प्रभावित करते हैं? क्या अंतर है, रहस्योद्घाटन को केवल सर्वनाश, भविष्यवाणी और पत्र के रूप में वर्गीकृत करना पर्याप्त नहीं है। जिस तरह से हम वास्तव में इसे पढ़ते हैं उसमें क्या फर्क पड़ता है? इसलिए, अगले भाग में, हम रहस्योद्घाटन की पुस्तक की व्याख्या करने के सिद्धांतों को

खोलने में थोड़ा समय व्यतीत करेंगे जो मुझे लगता है कि इन तीन अद्वितीय साहित्यिक प्रकारों से उत्पन्न होते हैं जिनमें रहस्योद्घाटन भाग लेता है।

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक - एपोकैलिप्टिक, प्रोफेटिक और एपिस्टल के पीछे की साहित्यिक शैली पर सत्र संख्या 2 है।